Gyanvividha, Vol.-2; Issue-1 (January-March) 2025 : PP-142-146

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 142-146
©2025 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

प्रा. डॉ. पी .एम.भुमरे
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभागप्रमुख,
श्री मधुकरराव बापूराव पाटील
खतगांवकर महाविद्यालय,
शंकरनगर, तह-बिलोली,
जि.- नांदेड, महाराष्ट्र.

Corresponding Author :

प्रा. डॉ. पी .एम.भुमरे
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभागप्रमुख,
श्री मधुकरराव बापूराव पाटील
खतगांवकर महाविद्यालय,
शंकरनगर, तह-बिलोली,
जि.- नांदेड, महाराष्ट्र.

सूरदास के काव्य में वात्सल्य भाव की अभिव्यक्ति

शोधसार - सूरदास के काव्य का महत्व इसलिए प्रतिपादित होता है कि, उनके काव्य में माँ - पुत्र, पिता-पुत्र के रिश्ते को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने वात्सल्य भाव के द्वारा व्यक्ति, परिवार एवं समाज के स्तर पर रिश्तों की अहमियत को स्थान दिया है। वात्सल्य भावों के द्वारा जो माता यशोदा और कृष्ण के बीच के रिश्तें का वर्णन किया है उसमें भक्त भाव विह्वल हो जाता है। यशोदा और कृष्ण के प्रेमभाव संयोग और वियोग रूप का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण की नटखट शरारतें, समाज एवं पारिवारिक भावनात्मक, गोप- गोपियों का प्रेम जो अभिव्यक्त हुआ है। उनकी बड़ी विशेषता यह है कि, उसमें तन्मयता, सहजता एवं मनोवैज्ञानिकता भी है। साथ ही भ्राता का वात्सल्य, गोपियों की श्रीकृष्ण के प्रति जो संवेदना प्रकट हुई है उससे बाल स्वभाव की मनोरम झाकियाँ प्रस्तुत हुई है।

कुंजी शब्द - वात्सल्य भाव, माता-पिता का वात्सल्य, भ्राता का भाई प्रेम, गोपियों का प्रेम, नंद-यशोदा का पुत्र-प्रेम, बाल सखा के भाव।

प्रस्तावना- 14वीं सदी आते- आते पूरे भारत में मुगलों की सल्तनत स्थापित हो चुकी थी। एक-एक सभी हिंदू राजा युद्ध करते-करते पराजित हुए थे या मुगलों के अधीन हो चुके थे। कुछ राजाओं ने मुगलों से हार स्वीकार करते हुए उनके प्रभुत्व में शासन चला रहे थे। कुछ राजा पारिवारिक विवादों के कारण देशी राजाओं का विद्वेष भी करने लगे थे। साथ ही कुछ राजाओं ने अपने ही देशी राजाओं को पराजित करने के लिए मुगलों से समझौता किया था। जिसके कारण मुगलों ने कुछ हिंदू राजाओं को सत्ता के लालच दिखाकर,युद्ध में हराकर मुगल सल्तनत के साम्राज्य की विस्तारपूर्वक निती को अपनाया था। साथ ही अन्य कारण भी मुगलों के विस्तार के लिए कारणीभूत रहे हैं। जिसमे भारतीय समाज में भगवान बुद्ध के बाद उपासना कर्मकाण्ड जैसी प्रवृत्तियों ने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक एकतापूर्ण समाज को

खोखला कर दिया था। हिंदू लोगों के मन में धर्म के प्रति प्रेम और ईश्वर के प्रति वह आस्था नहीं रह गई थी जिसके कारण विदेशी साम्राज्य को पैर ज़माने में स्थितियां और भी मजबूत होती रही है। परिणामस्वरूप सगुण भक्त कवियों ने साहित्य के माध्यम से भगवान के विविध रूपों को नायकत्व प्रदान करके हिंदू समाज को प्रेरित करने का कार्य किया है। उनका एक ही उद्देश्य रहा है कि, खोई हुई सत्ता, धर्म और संस्कृति की पुनः स्थापना करना।ऐसे में आलवार और नायनार संतों ने भक्ति के गीत और कविताएं लिखी। आलवार संत भगवान विष्णु के भक्त थे जबकि नायनार संत भगवान शिव के प्रति अपने भावों को व्यक्त करने लगे। इन संतों ने तमिल भाषा में अपने वचन भी लिखें। जबकि इसी के समानांतर उत्तर भारत में रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य और रामानंद जैसे संतों ने भक्ति के दर्शन को जन सामान्य में प्रसारित करने का कार्य किया है। इसी परंपरा में कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, ज्ञानेश्वर और नामदेव जैसे संत प्रमुख थे।सूरदास ने ब्रजभाषा को अपनाकर भगवान श्रीकृष्ण को आराध्य के रूप में अपने पदों और गीतों में विविधतापूर्ण भावों में अभिव्यक्त किया है।जिसमें श्रीकृष्ण के प्रति अपनी आस्था,श्रधा और प्रेम को वात्सल्य भक्ति भाव के रूप में अभिव्यक्त किया हैं।

वात्सल्य भाव के विविधतापूर्ण रुप जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं वैसे-वैसे बच्चों के नटखट हाव-भाव बदल जाते हैं। इन बढते बच्चों के संतुलित विकास हेतू उनके आहार-विहार का ध्यान रखना पड़ता है। बच्चों का सर्वांगीण विकास हो इसलिए माता बच्चों के आहार का विशेष ध्यान रखती है। साथ ही बच्चा जब छह-सात महीने का हो जाता है तो अन्नप्राशन करने की एक विधि प्रचलित होती है । इस परंपरा को गोकुल में धूमधाम से मनाया जाता है। जैसे कि, नंद के पुत्र जिसे कन्हैया के नाम से भी बुलाया जाता है। कन्हैया जब छह महीने के हो जाते हैं तब माता यशोदा द्वारा अनेक स्त्रियों को बुलाया जाता है और छह रसों के आस्वादन करने की विधिवत रीति निभाई जाती है। डॉ. रामकुमार वर्मा ने कहा है कि- " इन्होंने बालक कृष्ण और माँ यशोदा के हृदयों की भावनाओं को इतने सार्वजनिन रूप में प्रस्तुत किया है कि, वे चिरंतन और सत्य है । बालक के सरल कार्य का वे बालक बनकर ही वर्णन करते हैं। और उसका अपार सौंदर्य पाठकों के सामने बिखेर देते हैं"।[1] नंद और यशोदा बड़े प्यार से इस रीति को निभाकर प्रसन्नचित्त हो जाते है। बच्चे जैसे ही बड़े हो जाते वैसे ही उनकी बाल लीलाओं में वृद्धि हो जाती है। श्रीकृष्ण की विभिन्न बाल लीलाएं जैसे माँ-बाप की गोद में कृष्ण दूध पीते हैं। तो पेट भर जाने के बाद जंभाई देते हैं और उसके द्वारा फैली मुंह में माता को विश्व सृष्टि के दर्शन हो जाते हैं। जैसे –

"खीझत जात माखन खात ,अरुन लोचन ,
भौंह टेठी,बार-बार जंभात।"[2]

सूरदास ने कृष्ण के घुटनों के बल चलने का वर्णन बडा ही सुंदर किया है।और इसी बहाने बाल स्वभाव तथा मातृहृदय के अनेक भावरंगों को भी चित्रित किया है 'घुटरुनि चलत स्याम मनि- आँगन मातु पिता दोउ देखत री। कबहुँक किलकि तात मुख हेरत,कबहुँ मातु-मुख पेखत री'। माता श्रीकृष्ण को चलना सिखाती है। तब कृष्ण अपने पैरों से चलते हैं तो, उनके पैरों में जो पायल पहने हुए है उससे ऋणु झुनू मनमोहक ध्वनि उत्पन्न हो जाती है। श्रीकृष्ण के कभी पैर डगमगाते हैं तो लडखडाकर गिर भी जाते हैं । मातृहृदय करुणार्द्र हो जाता है। जैसे-

"सिखावति चलन जसोदा मैया। अरबराई कर
पानि गहावत, डगमगाई धरनी धरै पैया।"[3]

दुनिया में किसी भी माँ- बाप को अपने बच्चों पर विश्वास होता है। बच्चे किसी भी प्रकार की हरकतें करते है तो, माता उसे गंभीरता से नहीं लेती बल्कि उन्हें बाललीलाएं लगती है। जब माखन चोरी की शिकायत यशोदा के पास आती है तो माता यशोदा उस पर विश्वास नहीं करती और अपने बाल कृष्ण को किसी भी प्रकार की डांटती भी नहीं है। जबकि वह लोगों को ही कोसतें रहती है। लोग झूठ

बोलते हैं ऐसा मानकर उनकी ओर ध्यान नही देती।। यशोदा तो अपने प्रिय पुत्र पर मोहित है ।साथ ही अन्य स्त्रियां भी श्रीकृष्ण के सौंदर्य पर इतनी मोहित है कि, वह श्रीकृष्ण के सामीप्य को छोड़ना ही नहीं चाहती।सूरदास के वात्सल्य भाव का वर्णन करते हुए डॉ. मुंशीराम शर्मा कहते हैं कि, हमारी सम्मति में मातृहृदय का कोई भी कोना उनकी दृष्टि से ओझल नहीं रहा।"[4] सूरदास ने मातृहृदय के संयोग और वियोग जैसे दोनों भी रूप अभिव्यक्त किए है। जैसे- 'सूर प्रभु के प्रेम- मग्न भई ढिंग न तजति ब्रज बाल की।' मथुरा के ग्वाल - ग्वालन दूध का व्यवसाय करते हैं ।घर-घर जाकर दूध बेचते हैं। जब ग्वालन द्वारा दूध संकलित किया जाता है तब दूध से बने माखन की चोरी कृष्ण और उनके सखा द्वारा हो जाती है। तब ग्वाल और ग्वालन अपने दूध, माखन के चोरी की शिकायत लेकर यशोदा के पास जाते हैं। तब यशोदा उन लोगों पर ही क्षोभ व्यक्त करती है और उलटा ग्वालन को ही को डांटती है। जैसे-

"मेरे लाडले हो तुम जाउ न कहूँ।
तेरे ही कजै गोपाल, सुनहु लाड़िले लाल,
राखै हैं भाजन भरी।"[5]

सूरदास कृष्ण के रूप पर इतने आसक्त है कि, वात्सल्य और माधुर्य भाव की अभिव्यक्ति इतनी तल्लीन होकर की गई है जिसमें भक्त झूम हो उठता जाता है। श्रीकृष्ण के बाल रूप को देखकर नंद और यशोदा भी कृष्ण की बाललीलाओं से हर्षित हो जाते हैं। जैसे-

"जसोदा हरि पालने झुलावे
हलरावै दुलरावै मल्हावे
जोई सोई कछु गावै।"[6]

यशोदा के पुत्र श्रीकृष्ण जब पालने में सो जाते हैं तब लीलामय मनोहरी रूप को देखकर माता का हृदय भी हर्षोल्लास से पुलकित हो जाता है । सूरदास ने जो माता यशोदा के वात्सल्य का वर्णन किया है । उसका महत्व प्रतिपादित करते हुए डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि, "यशोदा के वात्सल्य में वह सब कुछ है। जो माता शब्द को इतना महिमाशाली बनाए हुए हैं। यशोदा के बहाने सूरदास ने मातृहृदय का ऐसा स्वाभाविक सरल और हृदयग्राही चित्र खींचा है कि, आश्चर्य होता है।"[7] मां अपने बच्चों की हरकतों से परिचित होती है फिर भी बच्चों की नटखट अदाओं पर प्रसन्न भी होती है। श्रीकृष्ण जब बचपन में माखन चुराकर खाते थे तब ग्वालन यशोदा से शिकायत भी कर लेती थी। परंतु उसे गंभीरता से नहीं लिया जाता रहा है। क्योंकि कृष्ण का बाल रूप गोकुलवासियों को आकर्षित करता रहा है। इस शिकायत के बहाने भी गोपियों का श्रीकृष्ण से मिलना हो जाता था । जब माता यशोदा श्रीकृष्ण से माखन चोरी करने पर जवाब पूछ लेती है, तब नटखट नंद दुलारे बताने के बहाने ढूंढ लिया करते हैं। जैसे -

"मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो,
भोर भयों गैयन के पाछे, मधुवन मोहि पठायो।
मैं बालक बहियन को छोटे, छिकों किहि बिधि पयो,
ग्वाल बाल सब बैर परे है, बरबस मुख लपटायो"।[8]

कृष्ण अपने सखों के साथ गायों को चराने के लिए वनों की ओर जाते थे। जब माता को यह पता चलता था तो माता उनसे वन जाने नहीं देती थी ।फिर कृष्ण माता के साथ झगड़ते और रूठ कर बैठ भी जाते थे। सूरदास ने श्रीकृष्ण की बाल क्रीड़ाओं का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है । जिस दिन कृष्ण घर पर नहीं होते उस दिन माता को अपना घर सूना-सूना लगता था। श्रीकृष्ण की प्रतीक्षा में माता बेचैन होकर बार-बार हतबल हो बैठ जाती थी और उनके आने का इंतजार करती थी। जैसे ही श्रीकृष्ण शाम को घर वापिस लौटते थे वैसे ही यशोदा का हृदय हर्षोल्लास से पुलकित हो जाता था। जैसे -

"जसुमति बौरि लिए हरि कनियाँ।आजु गयो मेरी गाई
चरावन, हौ बलि जाऊँ निछनियाँ।
मो कारन कछु आन्यो है, बलि वन- फल तोरी
कन्हैया।
तुमहि मिले में अति सुख पायो ,मेरे कुँवर कन्हैया।"[9]

माता को अपने पुत्र के प्रति दोनों भी प्रकार

का प्रेम रहता है। जैसे संयोग और वियोग भाव माता द्वारा अभिव्यक्त होते रहे है। जैसे ही कृष्ण के मथुरा गमन जाने की सूचना यशोदा को मिलती है वैसे ही उनमें विरह के भाव प्रस्फुटित होते है । स्वाभाविक है कि, मां-बाप को अपना पुत्र अपने से दूर जाता है तो दुख होता है । जैसे, "जसोदा बार-बार यौं भाखे। है ब्रज में कोउ हितू हमारौ जो चलत गोपालहिं रखै।" माता-पिता को अपने पुत्र के प्रति स्नेह होता है और जब अपना पुत्र अपने से दूर चले जाए तो माता-पिता दुख से व्याकुल हो उठते हैं ।जैसे यशोदा और नंद अपने पुत्र के अभाव में जो करुणामय हो जाते है। वे निम्न प्रकार से कहते हैं कि- 'नंद ! ब्रजै ठोंकि बजाए।देह बिदा मिलि जाहिं मधुपुरी जहाँ गौकुल के राय।' कृष्ण के अभाव में नंद और यशोदा के दाम्पत्य रतिभावों पर भी परिणाम हो जाते हैं। किसी भी माता-पिता को अपने बच्चे बहुत प्यारे होते हैं। जब बच्चे बडे जाते हैं तब माता-पिता भी चिंता से जूझते हैं। कुछ घरों में बच्चों का अधिक लाड - प्यार होता है जिस कारण बच्चे बिगड़ भी जाते हैं। साथ ही बच्चे अनेक प्रकार की शरारते भी करते हैं। जिस कारण गांव की महिलाएं शिकायती भी करती है। इस शिकायतों से तंग आकर यशोदा कृष्ण को रस्सी से भी बाँध देती है साथ ही कृष्ण को डांटती भी है। जिसके कारण नंद और यशोदा में तनाव- घुटन भी होती है। जैसे-

"कहियो जाय नंद बाबा सो निपट कठिन हिय
किन्हीं। सूर श्याम पहुंचाय मधुपुरी जहाँ गौकुल के
राय"।[10]

कृष्ण के वियोग में उनके सखा भी बहुत दुखी है क्योंकि कृष्ण के साथ अनेक क्रीड़ाए मग्न होकर करते थे । अब श्रीकृष्ण उनसे बिछड़ कर गोकुल की ओर चले गए हैं तो मथुरा जाने के बाद कृष्ण सब कुछ भूल न जाए । इस प्रकार के वियोग में उनके सखा दिन काटते हैं। जैसे वे कहते हैं कि-

"भए हरि मधुपुरी राजा बड़े बस कहाय।
सूत्र मागध बदत बिरुदहि बरनि वसुदयौ तात, राज
भुवन अंग भ्राजत,अहिर कहत लजात।"[11]

इस प्रकार सूरदास जी ने श्रीकृष्ण के वात्सल्य भाव का संयोगी और वियोगात्मक रूप बडा ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है । माँ यशोदा जब कृष्ण को डांटती है। उसे कहीं पर भी भागने के लिए रास्ते बंद कर देती है । ऐसे में श्रीकृष्ण के भाई बलराम को दया आती है और स्वयं बलराम ही अपने भाई की सहायता के लिए दौड़े आकर उनके आंसू पोंछ लेते है। फिर यशोदा माँ को समझाते हैं और श्रीकृष्ण की जगह पर मुझे बांधो इस प्रकार का कहते हैं,

"देखी श्याम ऊखसौ बांधे ,तभी हीं दोउ लोचन भरि
आए।
अजहूँ छाँडोगे लगराई, दोउ कर जोरि जननि पै आए।
स्यामहिं छोरि मोहि बाँधे बरू, निकसत सगुण भलें
नहिं पाए।"[12]

यशोदा माता जब श्रीकृष्ण को दण्डित करती है तब कन्हैया रोता हुआ देखकर गोपियों को दया भी आती है। सर्वप्रथम तो गोपियों ने ही श्रीकृष्ण की शिकायत की थी। परंतु जब माँ यशोदा श्रीकृष्ण को डांटती है तब श्रीकृष्ण रोते हैं तब गोपियों को तरस आता है और वह कहती है कि,

"जसुमती किसी यह सीख दई ।
सूतहि बांध तू मथति मथानि, ऐसी निठुर भई।"[13]

जब श्रीकृष्ण गोकुल में निवास करते थे तब गोपियों ने श्रीकृष्ण के साथ क्रीड़ाए भी की थी। कृष्ण की बंसी की ध्वनि सुनकर उन्हें परम सुख मिलता था। जैसे-

"गोकुल बसत संग गिरिधर के कबहूँ
बयारि लगी नहिं ताती।
हरि के लाड बदति नहि काहु
निसिदिन सुदिन रास रसमाती।"[14]

गोप-गोपीयों का कृष्ण के प्रति अत्यधिक लगाव रहा है। जब कृष्ण मथुरा में थे तो उनके साथ आत्म विभोर होकर गोपियों ने बाल क्रीड़ाएँ की।जो अपने प्रिय श्रीकृष्ण के लिए पिता, माता, भाई, पुत्र और पति सभी मोह माया के बंधन तोड़ देती है।

उपसंहार- सूरदास के भक्तिकाव्यों में वात्सल्य

भावभक्ति का जो पारिवारिक संबंध है। वह अत्यंत गहराई से और पवित्र भावों के रूप में वर्णन हुआ है। विशेष रूप से भारतीय परंपराओं में हमारे रिश्तों को विशेष महत्व होता है। यह विशेष भाव भगवान के प्रति जिस प्रकार का होता है उसी प्रकार माता और पिता के प्रति भी स्नेह को दर्शाता है। जिस प्रकार भगवान को अपने सच्चे सखा के रूप में माना जाता है, उसी प्रकार माता-पिता भी अपने पुत्रों को भगवान के ही अवतार के रूप में मानते हैं। इस पवित्र रिश्ते में समर्पण और विश्वास की जिस प्रकार की जरूरत होती है। उसी प्रकार का समर्पण नंद और यशोदा, साथ ही श्रीकृष्ण के भ्राता और गोपियों में देखा जाता है। जिस प्रकार भगवान की भक्ति से कृपा होती है उसी प्रकार माता-पिता भी अपने बच्चों से आत्मिक और भावनिक स्तर पर जुड़े होते हैं। बिना किसी शर्त के माता-पिता बच्चों को सहायता और मार्गदर्शन करते हैं। जिसमें वात्सल्य स्नेहपूर्ण भाव ही सूचित होता है।

सन्दर्भ सूची -

1. सूरदास आलोचनात्मक अध्ययन- डॉ . राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, प्रकाशन केंद्र लखनऊ, प्र. वर्ष- 1991.
2. सूर एवं तुलसी का बाल चित्रण-डॉ. सौ. अवंतिका कुलकर्णी, प्रकाशन साहित्यगार, जयपुर, संस्करण-1990, पृष्ठ सं-41.
3. सूर एवं तुलसी का बाल चित्रण-डॉ. सौ. अवंतिका कुलकर्णी, प्रकाशन साहित्यगार, जयपुर, संस्करण-1990, पृष्ठ सं-41.
4. सूर एवं तुलसी का बाल चित्रण-डॉ. सौ. अवंतिका कुलकर्णी, प्रकाशन साहित्यगार, जयपुर, संस्करण-1990,पृष्ठ सं-42,
5. सूरदास आलोचनात्मक अध्ययन-डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, प्रकाशन केंद्र लखनऊ, प्रकाशन वर्ष- 1991 , पृष्ठ सं-207.
6. सूर एवं तुलसी का बाल चित्रण-डॉ. सौ. अवंतिका कुलकर्णी, प्रकाशन साहित्यगार, जयपुर संस्करण-1990,पृष्ठ सं-44.
7. सूर एवं तुलसी का बाल चित्रण- डॉ. सौ. अवंतिका कुलकर्णी, प्रकाशन साहित्यगार, जयपुर संस्करण-1990,पृष्ठ सं-44.
8. भ्रमरगीत- सार(सूरदास) राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी- हरीश अग्रवाल, हरिश प्रकाशन मंदिर, आगरा, 1993, पृष्ठ सं -53
9. सूरदास (आलोचनात्मक अध्ययन)–लेखक- डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, डॉ. मनहरगोपाल भार्गव, प्रकाशन केंद्र, लखनऊ, पृष्ठ सं-91.
10. भ्रमरगीत-सार (सूरदास) राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी- हरीश अग्रवाल, हरिश प्रकाशन मंदिर, आगरा प्रकाशन, संस्करण-1993, पृष्ठ सं-57.
11. सूरदास आलोचनात्मक अध्ययन, डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी ,प्रकाशन केंद्र, लखनऊ, संस्करण दूसरा 1994.
12. सूर एवं तुलसी का बाल चित्रण- डॉ. सौ. अवंतिका कुलकर्णी, प्रकाशन साहित्यगार, जयपुर, संस्करण-1990, पृष्ठ सं-44.
13. सूर एवं तुलसी का बाल चित्रण-डॉ. सौ. अवंतिका कुलकर्णी, प्रकाशन साहित्यगार, जयपुर, संस्करण-1990, पृष्ठ सं-47.
14. भ्रमरगीत- सार (सूरदास) हरीश दो राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी हरीश अग्रवाल, हरिश प्रकाशन मंदिर, आगरा प्रकाशन, संस्करण-1993, पृष्ठ सं-94.

•